देव संस्कृति विश्वविद्यालय

www.dsvv.acin

गीतामृतं

शारदीय नवरात्र

21 से 29 सितम्बर 2017

अधिदैवं किमुच्यते ?

"पुरुषश्चाधिदैवतम्"

अक्षर ब्रह्म योग

अधिभूत ब्रह्म अधिदैव
कर्म अध्यात्म अधियज्ञ
अधिभूत अन्त में भगवान
अधियज्ञ अधिदैव कर्म
अन्त में भगवान ब्रह्म
अध्यात्म अधियज्ञ

अन्त में भगवान ब्रह्म
अध्यात्म अधिभूत कर्म
अधिदैव अधियज्ञ

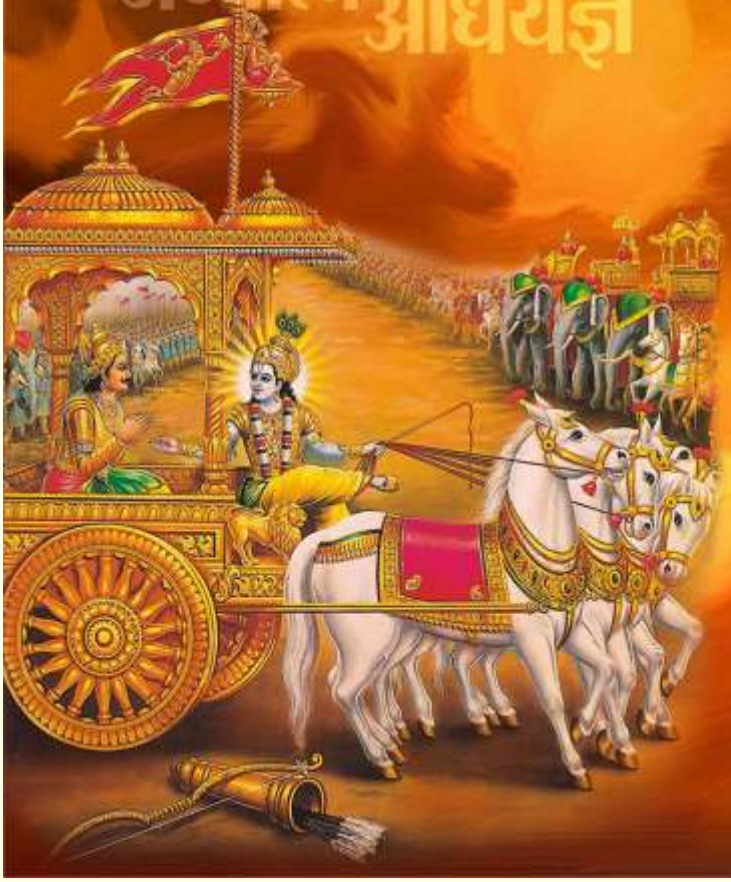

नवरात्रि षष्ठम दिवस

26/09/2017

विशेष उद्बोधन-

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या

कुलाधिपति, देव संस्कृति विश्वविद्यालय

विषय - अक्षर ब्रम्ह योग। (8वां अध्याय - श्री कृष्ण द्वारा अर्जुन के पूछे सात प्रश्नों के उत्तर)

नवरात्र षष्ठम दिवस: पंचम प्रश्न - अधिदैवं किं ? उत्तर - "पुरुषश्चाधिदैवतम्"। (गीता 8/1 , 8/4)

- **तीन सत्ताएं हैं आधिभौतिक, आधिदैविक, आध्यात्मिक।**
- **आधिभौतिक - स्थूल, आधिदैविक - सूक्ष्म, आध्यात्मिक -Soul से related (कारण)। इन तीनों स्वरूपों से सृष्टि को एक्सप्लेन किया जा सकता है।**
- **गीत - तुझमें ॐ, मुझमें ॐ, सबमें ॐ समाया... सबसे कर लो प्यार जगत में कोई नहीं पराया।**

विद्यार्थियों की जिज्ञासाएं एवं समाधान –

- Do you think world is preparing for world war three? Dr. Sahab said NO, I don't think so. Power Balance जहां होता है वहां युद्ध नहीं होता।
- **भावनाओं को कैसे रोकें?** - भावनाओं को रोकने की जरूरत नहीं है। भावनाओं को आने दो, बहने दो। भावनाओं को जब परिष्कृत करोगे तो भावनाएं बहुत ऊंचे स्तर तक चली जाएंगी। भावनाओं का परिष्कार करो। भावनाओं को रोकने से तुमको भावोद्वेग, इमोशनल डिसऑर्डर्स, साइकिक डिसऑर्डरर्स हो सकते हैं। भावनाओं को रोकने की जरूरत नहीं है। ऐसा पागलपन भी नहीं होना चाहिए कि भावनाओं को जगह-जगह बोल रहे हैं, जगह-जगह बता रहे हैं।
- **गायत्री मंत्र में सूर्य की आराधना होती है पर उसका नाम गायत्री मंत्र क्यों?** - गायत्री मंत्र का देवता सूर्य है इसलिए सूर्य की आराधना होती है।
- **विष्णु और शिव जी के मंदिर बहुत है लेकिन ब्रह्मा जी के नाम पर कुछ ही मंदिर है?** ब्रम्हा जी के मंदिर इसलिए नहीं बनाए जाते क्योंकि ब्रम्हाजी पितामह है। ब्रम्हा जी सृष्टि के सृजनकर्ता। विष्णु जी सृष्टि के पोषणकर्ता। शिव सृष्टि के संहार कर्ता। कुछ प्रतिबंध सा लगा हुआ है इनके मंदिर बनाने को लेकर। हम त्रिदेवों को मिलाकर पूजा करते हैं!
- **मूर्ति पूजा का क्या प्रयोजन है यदि है तो मना क्यों किया जाता है?** - मूर्ति की पूजा की जाए या नहीं की जाए इसमें आज बहुत वाद-विवाद है। लोग कहते हैं कि मूर्ति की पूजा करने से क्या फायदा?- मूर्ति में प्राण होता है, मूर्ति में शक्ति होता है मूर्ति में वास्तु देवता को हम स्थापित करते हैं। अपनी-अपनी दृष्टि से लोग आज इसे देखते हैं।
- **हमारे अंदर परमात्मा का स्थान है तो हम मंदिर क्यों जाता है?** यह तो अपने आप से पूछना चाहिए कि हम क्यों जाते हैं? और अगर आप मंदिर जाते हैं तो फिर इसका मतलब है आप को प्रतीक चाहिए, You want a symbol. प्रतीकवाद में आदमी जगह-जगह जाता है और भगवान को ढूंढता है और कोशिश करता है कि उन के माध्यम से हमें प्रेरणा मिले। जैसे अंबे माता का चित्र इससे हमें प्रेरणा मिलती है। गायत्री माता का चित्र इससे हमें प्रेरणा मिलती है। हम अपने गुरु का चित्र क्यों लगाते हैं? गायत्री माता का चित्र क्यों लगाते हैं?- ताकि इनके माध्यम से हमें गुणों का पता चले, ये प्रतीक है भगवान के। प्रतीक से प्रेरणा मिलती है और गुणों को अपने अंदर उतारने का भाव उत्पन्न ना होता है।
- **विचार मन और मस्तिष्क दोनों से आते हैं परंतु यह कैसे जाने कि विचार कहां से आया है और निर्णय लेने में प्राथमिकता किसकी करनी चाहिए?** - मैंने तुमको एक मंत्र दिया है कि मन मेरे मित्र बन जा। जो मन तुम्हारा मित्र है वह सच्चा मन है और जो तुम्हारा मन शत्रु है उसको मत मानो। दो तरह की राय आती है एक सही राय आती है और एक गलत राय आती है सही विचार का चुनाव करो। इसलिए कौन सा विचार कहां से आया है इसके चक्कर में पड़ने की बजाय है, कौन-सा विचार सही आया है जिसने तुमको सही राय दी, उसे अपनाओ। सही राय देने वाला विचार सही विचार है।
- **गुरु के बिना ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती तो गौतम बुद्ध ने ज्ञान कैसे प्राप्त कर लिया?** आपको कैसे पता कि गौतम बुद्ध के गुरु नहीं थे। गौतम बुद्ध के बहुत सारे गुरु थे। गौतम बुद्ध के सबसे बड़े जो गुरु थे वह थे देवता। सॉन्ग ऑफ गॉड्स(Song of Gods) करके किताब लिखी है ऐडमिन अर्नाल्ड ने और उसमें यह लिखा है कि देवताओं ने पुकारा उनको उठो, जागो हे बुद्ध! तुम बुद्ध पुरुष हो जागो। सिद्धार्थ को जगाने की कोशिश की उन्होंने। जगाने के बाद उन्हीं देवताओं में से एक बना बूढ़ा पुरुष, एक बना

बीमार, एक बना डेड बॉडी और उन्होंने बन करके उनको संकेत किया कि तुमको सारे संसार के दुखों की मुक्ति के लिए आना चाहिए। तो गुरू कई हो सकते हैं। प्रेरणा देने लायक कई गुरु हो सकते हैं परंतु उनके ऐसे गुरु जैसे वह खुद गुरू थे बोधगल्यायन के और महाकाश्यप के, ऐसे गुरु उनके कोई नहीं थे। उनके असली में जो गुरु थे वो थे उनका अपना "स्व"। हम अपने स्व को इतना विकसित कर सकते हैं कि किसी गुरु की जरूरत ना पड़े परंतु यह नहीं कि आपको उससे गुरूर आ जाए कि हम तो अपने गुरु खुद है।

- **श्रद्धा, आस्था, और विश्वास क्या है? श्रद्धा** का मतलब होता है- आदर्शों से असीम प्यार, आदर्शों के प्रति निष्ठा, आदर्शों के प्रति प्रेम और आदर्शों के लिए मर मिटने की अंदर से ललक, जिज्ञासा। **आस्था** का मतलब होता है कि हम आपको मानते हैं डेडिकेटेड(Dedicated). हमारे अंदर मन में जो डेडिकेशन है वह आपके लिए है, ये आस्था है। आस्था मूल्यों पर भी हो सकती है और विचारों पर भी हो सकती है। पर श्रद्धा व्यक्ति विशेष के प्रति भी हो सकती है, विचारों के प्रति भी हो सकती है। श्रद्धा सबसे ऊंची चीज है। और **विश्वास** "भवानी शंकरो वंदे श्रद्धा विश्वास रुपिणौ।" भवानी अगर श्रद्धा है तो शंकर विश्वास है। यह विश्वास कि हम जो कुछ भी करेंगे वह सही होगा। विश्वास स्वयं के प्रति। तीनों में बहुत महीन-महीन सी डिवाइडिंग लाइन्स है otherwise कोई अंतर नहीं है।
- **पाप और पुण्य क्या है?** - ऐसा कर्म जिसको करने के बाद पश्चाताप हो वह **पाप** है और जिसको करने के बाद अंदर से मन में थैंक्स(धन्यवाद के भाव) आए वह **पुण्य**। जिसको करने के बाद आत्मा बार-बार पछताए कि ऐसा क्यों किया यह पाप है और जिसको करने के बाद ऐसा लगे कि ऐसा मौका और मिले तो हम इसे करेंगे अंदर से यदि मन को अच्छा लगे तो पुण्य। पुण्य वह होते हैं जो संचित कर्म होते हैं जो हमारे अंदर जाकर हमें अच्छे पथ पर ले जाते हैं और प्रकाशित करते हैं हमारे जीवन को।
- हम बचपन में कीड़े मकोड़ों को मार देते थे यदि हम इस का प्रायश्चित करना चाहें तो क्या करें? खटमल काट देता है तो इसे सब मारते हैं। इसमें क्या है और यदि प्रायश्चित करना है तो प्रायश्चित के लिए हमारे यहां भारतीय संस्कृति में तर्पण की व्यवस्था बनाई गई है। आप इनका तर्पण कर दिया करो। जिसमें कुछ भोजन चीटियों के लिए, कुछ भोजन कुत्ते के लिए, कुछ भोजन कौओं के लिए ऐसे चार-पांच बलि अलग से निकाली जाती है। श्राद्ध कर दिया करो श्राद्ध-तर्पण करने से प्रायश्चित का मौका मिलता है, श्राद्ध तर्पण पर करना चाहिए इससे पितरों को मुक्ति मिलती है। मन को शांति मिलती है।
- जब हमारी कोई गलती नहीं होती है फिर भी कोई हमें कोई देता है तो बहुत दुख होता है? - दुखी होने से कोई फायदा नहीं है मत ध्यान दो उसे और कोई अगर कहता भी है तो वह दुबारा वापस उसके ऊपर ही जाकर लगेगा, हाय उसको ही लगेगी। आप अपने काम बस करते चलिए।

विषय वस्तु सार-

- **आज छठवें दिन की देवी है कात्यायनी। माँ दुर्गा के छठवें स्वरूप का नाम कात्यायनी है। उस दिन साधक का मन 'आज्ञा' चक्र में स्थित होता है। कत नामक एक प्रसिद्ध महर्षि के पुत्र कात्यायन के यहाँ माँ जन्मी कात्यायनी रूप में। रजोगुण में क्रिया है, कात्यायनी साधक के रजगुण का नाश करती है, कामना-वासना से मुक्त करती हैं। महिषासुर का वध इसी देवी द्वारा होता है।**

- हम लोगों ने अपनी यात्रा की शुरुआत पहले श्लोक से किये थे।

  श्लोक - किं तद्ब्रह्म "किमध्यात्मं" किं पुरुषोत्तम। "अधिभूतं च किं" "**प्रोक्तमधिदैवं किमुच्यते**" ॥

  भावार्थ - अर्जुन ने कहा- हे पुरुषोत्तम! वह ब्रह्म क्या है? अध्यात्म क्या है? कर्म क्या है? अधिभूत नाम से क्या कहा गया है और अधिदैव किसको कहते हैं ॥1/1॥

श्लोक- अक्षरं ब्रह्म परमं स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते। भूतभावोद्भवकरो विसर्गः कर्मसंज्ञितः॥

भावार्थ - श्री भगवान ने कहा- परम अक्षर 'ब्रह्म' है, अपना स्वरूप अर्थात जीवात्मा 'अध्यात्म' नाम से कहा जाता है तथा भूतों के भाव को उत्पन्न करने वाला जो त्याग है, वह 'कर्म' नाम से कहा गया है ॥8/3॥

श्लोक - अधिभूतं क्षरो भावः **"पुरुषश्चाधिदैवतम्"**। अधियज्ञोऽहमेवात्र देहे देहभृतां वर॥

भावार्थ - उत्पत्ति-विनाश धर्म वाले सब पदार्थ अधिभूत हैं, हिरण्यमय पुरुष (जिसको शास्त्रों में सूत्रात्मा, हिरण्यगर्भ, प्रजापति, ब्रह्मा इत्यादि नामों से कहा गया है) अधिदैव है और हे देहधारियों में श्रेष्ठ अर्जुन! इस शरीर में मैं वासुदेव ही अन्तर्यामी रूप से अधियज्ञ हूँ ॥8/4॥

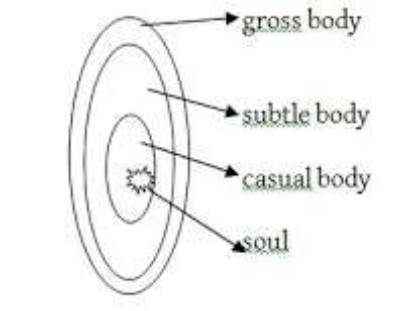

- बड़ी स्पष्ट डेफिनेशन है - Gross, Subtler and Causal.
- **Gross - स्थूल शरीर (अधिभूत). Subtler - सूक्ष्म शरीर (अधिदैव), Causal - अध्यात्म/कारण शरीर (अधियज्ञ)। ये तीन चीजें है।**
- **अर्जुन का प्रश्न है अधिदैव क्या है? पुरुष ही अधिदैव है। हमारा संपूर्ण अस्तित्व आधिदैविक, अधिभौतिक और आध्यात्मिक। तीन आयामों में, तीन डाइमेंसन में सारा जगत बना हुआ है।** किसी भी चीज के तीन डाइमेंसन होते हैं एक चैतन्य जगत जो सभी जगह एक विद्यमान है, दूसरा समष्टि रूप में और एक व्यष्टि रूप में। जैसे हम जड़ वस्तु बनाते हैं मकान बनाते हैं। मकान जड़ है लेकिन मकान में हम ग्रह देवता की पूजा करते हैं, वास्तु देवता की पूजा करते हैं, वास्तु देवता को स्थापित करते हैं। और नहीं करते तो हम वास्तु के हिसाब से मकान बनाते हैं और मकान बनने के बाद उसमें चैतन्य सत्ता प्रतिष्ठित हो जाती है। ये जो मकान होता है तरह-तरह के तरंगें देने वाला, पॉजिटिव वाइब्रेशन देने वाला होता है।
- **अर्जुन ने कहा अधिभौतिक(अधिभूत) क्या है - जिसका क्षणर होता है। क्षरो भावः। पर अधिदैव क्या है - "पुरुषश्चाधिदैवतम्" एक ही शब्द में सारा अर्थ आज्ञा पर है लंबा-चौड़ा। अधिदैव जो है वह पुरुष है। पुरुष क्या है- वास्तु पुरुष। ये वह पुरुष है जो आपके अंदर विभिन्न रुपों में बैठा हुआ है।**
- जड़-चेतन हर जगह का कण-कण में समाए हुए हैं भगवान, आध्यात्मिक रूप है। शुद्ध रूप में कहें तो यह कुर्सी, मकान, दुकान यह सब जड़ है। मनुष्य शरीर तभी तक सुखी रहता है जब तक इसमें रहने वाला जीवात्मा तेजवान है। चेतन क्या है तेजवान जीवात्मा। जब आत्मा तेजवान नहीं होती तो क्षरण होने लगता है।
- **हर चीज में, हर वस्तु में एक वास्तु देवता होता है और वास्तुदेवता मतलब वस्तुओं का दैविक स्वरुप, चैतन्य स्वरूप।**
- हम गृह प्रवेश के साथ-साथ घर में वास्तु देवता, ग्रह देवता की पूजा करते हैं। गांव में कहते हैं हर घर में शाम को दिया-बत्ती होनी चाहिए। सांझ होते ही गावों में लोग दिया-बत्ती जलाते थे, पूजा आरती होती। ऐसा क्यों? जो ग्रह देवता है वह प्रसन्न रहते हैं। खुश रहते हैं हमें नहीं मालूम वह कौन है इनविजिबल है पर ग्रह देवता को प्रसन्न रखने के लिए, खुश रखने के लिए, आशीर्वाद लेने के लिए जो उनका दैविक स्वरुप है सकारात्मक ऊर्जा से भरपूर है, उसका हम प्रयत्न करते हैं कि उनसे हमें उर्जा मिले, ग्रह देवता से हमें उर्जा मिले इसलिए हम उनको प्रसन्न करने के लिए दीपक जलाते हैं और आरती उतारते हैं।
- **जिस घर में ग्रह देवता नहीं है, ग्रह देवता चले गए हैं वहां परेशानियां बढ़ने लगती है। कभी आपने किसी का अपमान कर दिया तो वह आपको श्राप देकर चले जाता है तो ग्रह देवता को अपने साथ लेकर चले जाता है। परेशानियां बढ़ने लगती है, उपद्रव बढ़ने लगती है, दिक्कतें होने लगती हैं क्योंकि ग्रह देवता है ही नहीं।**
- बहुत दिनों तक किसी घर में दीया नहीं जले तो वहां प्रेतात्माएं वास करने लगती हैं। क्योंकि उनको अपने लिए पॉज़िटिव वातावरण मिल जाता है। आपके लिए निगेटिव है पर उनके लिए पॉज़िटिव है वातावरण।
- **मनुष्य का शरीर है जीवन है। शरीर जीवात्मा छोड़ दे तो क्या होगा?- शरीर को जीवित नहीं रख सकते।** Mummies - बॉडी को सूखाकर रखा जाता है केमिकल की सहायता से इस प्रकार से ट्रीट किया जाता है कि हजारों साल तक शरीर को सुरक्षित

रखा जा सकता है। लेकिन जीवन नहीं होता है। चेतना नहीं होती। ऐसा केवन मनुष्य में ही नहीं होता। घरों में, वस्तुओं में, पेड़-पौधों में भी जीवन है, चैतन्य सत्ता है। लोग पीपल के पेड़ की पूजा करते हैं वहां चैतन्य सत्ता निवास करती है। और चैतन्य सत्ता न हो तो वह सूख जाएगा। बरगद में चेतनता न हो तो वह सूख जाएगा।

- **तो भगवान से पूछते हैं अर्जुन अधिदैवं किं? तो भगवान कहते हैं - "पुरुषश्चाधिदैवतम्" । जिसमें पुरुष जिन्दा है, पुरुष विद्यमान है वह अधिदैव है। पीपल के अंदर भी पुरुष है, बरगद के अंदर भी पुरुष है, तुलसी के अंदर भी पुरुष है।**
- **पुरुष - जो पुर में रहे। पुर में स्थापित सत्ता को पुरुष कहते हैं।**
- **पुर क्या है - यह मनुष्य शरीर भी एक नगर है। 9 दरवाजों की आध्यात्मिक राजधानी हमारा शरीर। (नौ द्वार - दो आँख , दो नसिका छिद्र , दो कान , मुख , मूलाधार क्षेत्र में नाभि(वायु) व उपस्थ द्वार।**
- **श्लोक - सर्वकर्माणि मनसा संन्यस्यास्ते सुखं वशी। नवद्वारे पुरे देही नैव कुर्वन्न कारयन्॥**
  भावार्थ- अन्तःकरण जिसके वश में है, ऐसा सांख्य योग का आचरण करने वाला पुरुष न करता हुआ और न करवाता हुआ ही नवद्वारों वाले शरीर रूप घर में सब कर्मों को मन से त्यागकर आनंदपूर्वक सच्चिदानंदघन परमात्मा के स्वरूप में स्थित रहता है॥5/13॥
- **इस अध्यात्मिक राजधानी को सुरक्षित रखना हमारा काम है। दैवीय सत्ता जीवात्मा इसका दैवीय रूप है। इस नौ द्वारों की अध्यात्मिक राजधानी में कौन रहता है? - पुरुष रहता है।**
- **जीवन में हम केवल भौतिक आयाम लेकर सुखी नहीं रह सकते। केवल Physical Dimensions में सुखी नहीं हो सकते। इसके लिये हमें सकारात्मक चेतना का प्रवाह बढ़ाना पड़ेगा, पॉजिटिव एनर्जी का प्रवाह हमारे अंदर होना चाहिए ताकि हम सूक्ष्म रूप में प्रबल, प्राणवान हों।**
- जैसे हमें भोजन चाहिए, खाना चाहिए खाना स्वादिष्ट भी हो पौष्टिक भी हो लेकिन इतना ही पर्याप्त नहीं है। कई बार आदमी घर के बाहर खाना खाता है तो कहता है खाना खाने में वह मजा नहीं आया जो घर में आता था। मां के हाथ का खाना एक तरह का खाना होता था। बाहर कैसे भी खाना खा लेते थे पर जो असली भोजन है वह तो मां बनाती थी। कितना भी टेस्टी भोजन करने पर मैन संतुष्ट नहीं होता पर जब घर का खाना खाने को मिलता है तो पेट भर के खाने का मन करता है। मन संतुष्ट होता है। मनुष्य से संतुष्ट होता है खाना बने घर में और उसे प्रेम से परोसा जाए। खाना बनाने वाले और पर उसने परोसने वाले का प्रेम, उसकी उर्जा उस खाने में घुली होती है। इसलिए भोजन में प्राण आ जाता है।
- हमारे यहां हर घर में, हर कर्म में की प्रतिष्ठा होती है चैतन्य सत्ता की।
- पुराने जमाने में क्षत्रिय राजा होते थे तू अपने हजारों की पूजा करते थे अपनी तलवार, कवच, धनुष, बाण सब की पूजा करते थे। विजयदशमी के दिन शास्त्रों की पूजा होती है। औजारों की पूजा होती है हमारे यहां विश्कर्मा पूजा के दिन। कुल्हाड़ी की पूजा, फावड़े की पूजा, हथौड़ी की पूजा क्यों करते क्योंकि अब ये वस्तु नहीं होती अब इसमें पुरुष देवता का निवास हो गया। ये पुरुष देवता इसमें बने रहे ताकि हम इनसे काम ले सकें इसलिए पूजा की जाती है।
- वस्तुओं में सकारात्मकता को दैवीय तत्व मानते हैं जिसे पूजा के माध्यम से इंट्रोड्यूस करते हैं हम।
- भगवान गीता में कहते हैं यज्ञ के माध्यम से हम देवताओं को पुष्ट करते हैं और देवता हमें पुष्ट करते हैं। हम हर जगह दैवीय चेतना को पुष्ट करते हैं और दैवीय चेतना हमें पुष्ट करती है -
- **श्लोक - देवान्भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः। परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ॥**
  भावार्थ - तुम लोग इस यज्ञ द्वारा देवताओं को उन्नत करो और वे देवता तुम लोगों को उन्नत करें। इस प्रकार निःस्वार्थ भाव से एक-दूसरे को उन्नत करते हुए तुम लोग परम कल्याण को प्राप्त हो जाओगे ॥3/11॥
- कुछ सत्ता विज़िबल नहीं है, इनविजिबल भी है जिसकी ऊर्जा को हम महसूस करते हैं।
- सभी योनियों में जीवन है।

- **कहते हैं भगवान जब आते हैं, उद्धार करने के लिए जब अवतार लेते हैं तो ऐसा नहीं कि साधु-महात्माओं का ही उद्धार किया, वृक्षों- वनस्पतियों का भी उद्धार करते हैं। क्योंकि वहां भी देवता है। जहां भी चेतना पुकार रही है ऊपर उठने के लिए, आगे बढ़ने के लिए वहां वो उसका भी कल्याण करते।**
- **भागवत की कथा है** - खेल-खेल में भगवान श्री कृष्ण ऊखल को घसीटते हुए लेगये। और दो पेड़ों के बीच में ऊखल को अड़ा दिया। और उसके बाद झटका दिया तो दोनों के दोनों जो पेड़ थे उसमें से दो देवता निकले। उन दोनों देवताओं ने कहा हम बहुत समय से आपकी प्रतीक्षा कर रहे थे भगवन आप कहां थे। ये यक्षराज के दो बेटे थे नल और कूबेर वृक्ष रूप में। उन्होंने कहा हम नल और कूबेर हैं। एकबार हम सब यक्ष स्त्रियों के साथ स्नान कर रहे थे तो एक ऋषि वहां पर पहुंच गए और मजाक में पानी की छींटे हमने ऋषि महाराज पर डाल दी तो उन्होंने हमें श्राप दे दिया कि तुम दोनों जड़ता से ग्रसित हो इसलिए तुम जड़ हो जाओ। उन्होंने कहा महाराज हम यक्षराज के पुत्र है। ठीक है हम तुम्हारे कल्याण का उपाय बताते हैं। तुम ऐसे ही पेड़ बने रहना जड़ बने रहना ब्रज भूमि भगवान का हृदय है वहां पैदा कर रहे हैं तुम लोगों को और जहां भी रहोगे, भगवान ब्रज भूमि में जरूर चक्कर लगाते किसी भी कॉल में हो भगवान ब्रज भूमि में जरूर चक्कर लगाते हैं। बोले वहां जन्म लेना तुम्हारा उद्धार हो जाएगा। तो फिर भगवान कृष्ण के द्वारा ओखल से पेड़ गिरे और दोनों देवता प्रकट हुए दोनों का उद्धार हुआ। दोनों जीवात्मा देवता के रूप में उन पेड़ों में थे।
- चेतना केवल मनुष्य में ही नहीं होती पेड़-पौधों में भी होती है।
- पहले लोग यह मानते थे कि पेर निजी होते हैं फिर एक साइंटिस्ट आए जिनका नाम था **जगदीश चंद्र बसु (कोलकाता)** जिन्होंने **कहा कि पेड़ भी कुछ कहते हैं, कुछ सुनते हैं, कुछ बताते हैं, कुछ महसूस करते हैं, उनसे कुछ कहो तो अनुभव करते हैं, अनुभव प्रदान करते हैं।** इनकी एक कहानी है। इनको सरकार ने वेतन देने से मना कर दिया सरकार ने कहा आपको ब्रिटिश सरकार का वेतन नहीं मिलेगा आपको उतना ही मिलेगा जितना इंडियन होने के नाते मिला चाहिए। उन्होंने कहा मैं सम्मानजनक वेतन चाहता हूं मैंने इंवेंशन भी किए जिसकी वजह से मुझे सर की उपाधि मिली है तो मैं नहीं चाहता कि सर की उपाधि बदनाम हो इसलिए मैं बिना वेतन के काम करूंगा। तो उनकी पत्नी उनको नाव से लेकर जाती थी, नाव तक के लिए पैसे नहीं थे उनके पास देने के लिए। बाकी समय में एक्स्ट्रा क्लासेस लेते थे पढ़ाते थे उससे पैसा आता था घर के खर्च चलते थे। पत्नी इनको अपनी नाव से गंगा पार कर आती थी जहां हावड़ा ब्रिज बना हुआ है उस इलाके में नाव से पार कराती थी और आने का समय होता था तो लेकर आती थी। इस कपल ने लगभग 15 साल तक ऐसे ही जीवन चलाया। उसके बाद जब सरकार को मालूम पड़ा तब उन्होंने उनकी वेतन उतनी ही कर दी जितनी ब्रिटिश सरकार में अंग्रेज बॉस की होती थी। इस इंसान की प्रतिभा की बात कर रहा हूं। इन्होंने क्रीस्कोग्राफ़ का आविष्कार किया। इनको फादर ऑफ रेडियो कहा जाता है। इनकी एक प्रतिभा नहीं थी। पेड़ पौधों में जीवन होता है इन्होंने खोज की "Plants feel pain" पेड़-पौधों को दर्द भी होता है। इसका मतलब यह नहीं कि तुम बोलो, कि शाकाहार क्यों करते हैं हमारे पास कुछ खाने के लिए नहीं बचेगा Plant feels the pain but surrender to you. हम उसको पूजते हैं नमस्कार करते हैं और भोजनालय में प्रणाम करके रखते हैं इसलिए कि हम उसको स्वीकार करते हैं।
- **एक कथानक है योगी कथामृत में** - एक व्यक्ति ने कांटेदार कैक्टस के पेड़ों पर प्रयोग किया कि आप लोग कटीले क्यों हो। भावना देना चालू किया उन्होंने कैक्टस के पेड़ों को। पुरुष देवता सब जगह होता है। वृक्ष- वनस्पतियों में भी है जड़ों में भी और खंभे के अंदर भी है प्रह्लाद ने बता दिया था। उस सज्जन ने एक प्रयोग किया उन पेड़ों के साथ। वे कटीले कैक्टस के साथ खेलते थे उनको भावना देते थे कि तुम पूरी तरह से सुरक्षित तो तुम डरो मत मैं तुम्हारे साथ बैठा हूं कांटो का हथियार लेकर तुम क्यों घूमते हो, तुम्हें क्या जरूरत है? आज से तुम कांटे छोड़ दो। धीरे धीरे धीरे एक डेढ़ दो महीने के अंतर्गत कांटे झड़ने लगे उन्होंने उस भाव को सुना काटे झड़ने लगे। और बिल्कुल प्लेन हो गए।
- **पेड़ बातें करते हैं पेड़ बुलाते हैं अपने आसपास की चीजों को भी वो बुलाते हैं।**
- श्वेत कमल नाम की किताब है (श्री अरविंद कैसी रविंद्र जी द्वारा लिखित) उसमें एक घटना है श्री माँ जो थीं। उन्होंने इसके ऊपर बहुत शोध की थी आधिदैविक रूप पर। उन्होंने कहा प्रत्येक वनस्पति का एक नेचर होता है। एक बार मरुस्थल में मरुभूमि में देवदार के पेड़ लगा दिए। ऐसे कैसे लग जायगा देवदार पाया जाता है ठंडी जगह में हजारों फिट की ऊंचाई में। तो मरुस्थल में

देवदार कि पेड़ लगा दिए श्री माँ के गुरु थे तेव (Teo - France Name) एक बार मरुभूमि में बर्फ गिरी। जहां देवदार होते हैं वहां बर्फ गिरती है। तो बड़े आश्चर्य चकित हो गए लोग बाग कि यह तो मरुस्थल है और यहां बर्फ कहाँ से गिर गयी। पेड़ों ने पुकारा कि हमारे लिए अनुकूल वातावरण नहीं है पर हमारे पास तो वो ठंढक आनी चाहिए जो हमें पहाड़ों में मिलती है। तेव ने कहा श्री माँ को कि यहां पेड़ों ने पुकारा , प्रकृति तो माँ होती है तो उन्होंने पुकारा कि आपने हमें जीवन दिया है तो सम्हालो भी आप। पेड़ों की पुकार सुनने के बाद बर्फ गिरी।

- **पेड़ों में भी एक दैवीय तत्व होता है।**
- **अर्जुन पूछते हैं अधिदैवं कि? भगवान कहते हैं -पुरुषश्चाधिदैवतम्। जो पुर में निवास करता है वह अधिदैव है।**
- इसलिए हमारे यहां टेबल कुर्सी मूर्ति सभी की पूजा की जाती है।
- **मूर्ति तो पत्थर है लेकिन उसमें चेतना का प्राण प्रतिष्ठा करते हैं प्राणों को प्रतिष्ठित करते हैं और वो मूर्ति जो भी पूजने आते हैं उनको उस प्राण तत्व के माध्यम से उनको पुण्य देती है, भला करती है उसकी बात भी सुनने लगती है।**
- हर चीज भौतिक तक सीमित नहीं है। पंचमहाभूत तो कलेवर है किसी चीज का। पर बाकि जो चीज है उसके अंदर सिमटी हुई चेतना है। पंचमहाभूत तो केवल आकार प्रदान करते हैं किसी चीज को।
- मकान में दैवीय चेतना है। मकान बना दिया पर अगर मकान में खुशहाली नहीं है तो। पुरुष देवता के घर में स्थापित होने से घर में खुशहाली आती है हम घरों में दैवीय तत्व की प्रतिष्ठा करते हैं।
- दैवीय तत्व को जो पहचान लेता है आनंदित होता है। अगर हमारे आसपास हमारे पड़ोसी सब अच्छे रहते हैं तो सकारात्मक ऊर्जा का अनुभव होता है।
- वास्तु देवता की हम पूजा करते हैं। कुल देवता की हम पूजा करते हैं ताकि घर में सब खुशहाल रहे।
- हम देखते हैं विवाह में शादी में सिर्फ ऐसा नहीं करते कि निमंत्रण देते हैं रिश्तेदारों को। हम अपने पितरों को भी निमंत्रण देते हैं हम अपने कुल देवता को भी निमंत्रण देते हैं। कर्मकांड में देव पूजन के क्रम यह आता है कि हमको देवताओं का पूजन करना चाहिए, कुल देवता का भी पूजन करना चाहिए। पितरों को भी पूजना चाहिए।
- **दैवीय तत्व अदृश्य सहायक होते हैं। इनविजिबल हेल्फर्स।**
- **जीवन में दैवीय तत्वों की सघनता - खुशहाली का श्रोत। (संस्कृति की सबसे बड़ी बात)**
- **भारत में आदिकाल से सबसे ज्यादा अगर अनुसंधान की किया गया है तो वह है जीवन का अनुसंधान।**
- अन्य देशो में भौतिक चीजों पर अनुसंधान हुआ है लेकिन भारत में जीवन के ऊपर अनुसंधान हुआ है।
- समझता और संपूर्णता मैं जीवन को समझाया गया कि कैसे जीवन के हर पक्ष को हम मजबूत करके रखें।
- हमारे जीवन में बहुत सी चीजें शामिल होती है घर, पड़ोसी, पशु, वनस्पति आदि जिनसे हमारा संवाद होता है।
- पितरों को श्रद्धा दें वह हमें शक्ति देंगे। एक किताब है जिसमें बताया गया है कि उनके श्राद्ध(श्रद्धा) से हमें शक्ति मिलेगी।
- **हमारा जीवन उतना ही नहीं है जितना हम समझते हैं उससे अधिक है।**
- **Positive Energy हमको स्वस्थ बनाती है और Negative Energy अस्वस्थ बनाती है।**
- ऊर्जा का प्रवाह जीवन में न टूटने पाए। ऊर्जा का प्रवाह सकारात्मक होगा तो वह हमें आगे बढ़ाएंगे। और ऊर्जा का प्रवाह नकारात्मक होगा तो वह हमें Decay करेगी।
- हमारा समय अच्छा और बुरा दोनों तरीके से होता है।
- **अच्छा समय - जब प्रकाश को, प्राण को धारण करने में समर्थ होते हैं। (पुर है जीवन का)**
- **बुरा समय - जब हम प्रकाश को, प्राण को धारण करने में असमर्थ होते हैं।**
- तो क्या करें इसके लिए अपनी पात्रता बढ़ाएं। उपासना, साधना और आराधना का क्रम जीवन में लाएं। ईश्वर को हर समय याद करते रहें।

- Psychology - Science of Psych. Psych का मतलब होता है Soul। थोड़ा और गहराई में जाए तो Psych का अर्थ होता है Science of Behavior. आज सायंटिस्ट नतीजे पर पहुचें हैं कि there is something beyond the psychology.
- **जीवन जितना दिखाई देता है उतना ही नहीं है उसके पार भी है।**
- **जिस जगह हम ऊर्जा Create करते हैं वहां प्राण होता है, ऊर्जा होती है। ब्रिटेन की साइंस पेपर में गढ़वाल के एक प्रोफेसर की रिसर्च पेपर में बताया गया है।**
- जहां यज्ञ होता है उसके आसपास के वातावरण में पेड़ पौधों के Growth rate में विकास में अन्य बाहर जो पेड़ पौधे लगे हैं उनकी विकास की तुलना में अंतर होता है। ऐसा एक प्रयोग ब्रम्हवर्चस शोध संस्थान द्वारा किया गया। Controlled Environment में यज्ञ की सभी प्रक्रियाओं का प्रयोग।
- हमारा जीवन केवल शरीर से नहीं चलता उसको चलाने के लोए ऊर्जा की आवश्यकता होती है।
- जो ऊर्जा है वह हमारे जीवन का आधिदैविक रूप है।
- **ग्रीक दार्शनिक अरस्तू ने एक बात कही है - World of Idea. उन्होंने कहा पंचभूतों का जो जगत है वह ठीक है पर जो सबसे बड़ा जगत है वह है पांच तन्मात्राओं का। अरस्तू कहता है जब कोई घटना घटी होती है तो पहले स्थूल जगत में होती है फिर वर्ल्ड ऑफ आइडिया में आती है सूक्ष्म जगत में फिर उसके बाद वह घटना रूप लेती है। आधिभौतिक रूप में नहीं आती है आधिदैविक रूप में आती है।**
- **श्री अरविंद ने भी इसपर काम किया उन्होंने कहा - There is no Coincidence in Life.कुछ भी संयोग नहीं है। सब विधि-विधान से हो रहा है।**
- **सूक्ष्म जगत, भौतिक जगत को प्रभावित करती हैं।** पहले घटना भौतिक जगत में आती है, फिर मन में आती है, फिर जीवात्मा में आती है। हमारा समय अच्छे-बुरे तरीके से बदलने लगता है।
- कई बार लोग कहते हैं हमारे जीवन में उपासना की जरुरत क्यों पड़ती है? साधना तप की जरूरत क्यों पड़ती है? - इससे हमारा आधिदैविक रूप प्रकाशित होता है। Strong बनता है। ऊर्जावान सकारात्मक भावों से ऊर्जित होता है।
- ईश्वर की कृपा जीवन को आधिदैविक रूप से वरदान देती रहती है और हमारी खुद की साधना उसको पोषित करने लगती है।
- हमारा आधिदैविक रूप मलिन होने लगे तो हमारे जीवन में दुर्घटनाएं आने लगती हैं। और अगर हम जीवन के आधिदैविक रूप को पहचान लें तो जीवन में स्वस्थ रह सकते हैं , खुशहाल रह सकते हैं।
- Positive Energy मन की बात है। हम संवाद स्थापित करने की कोशिश कर रहे हैं अपने आधिदैविक रूप से। यह संवाद हमारे खुशहाल जीवन के लिए जरूरी है।
- **पतंजलि ने एक शब्द भगवान के लिए उपयोग किया है - पुरुष विशेषः ईश्वरः। पुरुष विशेष है ईश्वर में। और गीता में। इस पुरुष विशेष को आध्यात्मिक रूप दिया - पुरुषोत्तमः अर्थात श्रेष्ठ पुरुष।**
- **पुरुषोत्तम जीवन का आध्यात्मिक स्वरूप है। लेकिन जो हमारे सबसे नज़दीक है वह है पुरुष का आधिदैविक रूप।**
- अगर हम जीवन में चाहे की अच्छी घटनाएं घटे जीवन खुशहाल रहे तो उपासना,साधना,आराधना के माध्यम से हम अपने सूक्ष्म जगत को, सूक्ष्म वातावरण को सकारात्मक करते हैं, प्रभावित करते है।
- तपस्या से सकारात्मक ऊर्जा पैदा होती उस पर निर्भर करता है कि आपके आसपास का वातावरण कैसा बनेगा।
- अर्जुन पूछते है अधिदैवं क्या है। कृष्ण कहते हैं ये पुरुष अधिदैव है - पुरुषश्चाधिदैवतम्।
- तूम उतने ही नहीं जितने तुम दिखते हो तुम उससे भी गहरे हो। तुम अधिदैव हो। अपने अंदर की अदृश्य सत्ता को पहचानों।
- सुखद अनुभूति हुई चाहिए जीवन में।
- आधिभौतिक रूप बताता है कि जीवन का क्षरण होता है और आधिदैविक रूप बताता है कि तुम अंदर से विकसित हो रहे हो।

- एलोपैथिक में दवाओं में सूक्ष्मता नहीं होती और आयुर्वेद की दवाओं में सूक्ष्मता की चर्चा आती है। आयुर्वेद विज्ञान में ऋतुचर्या, दिनचर्या की बात आती है। किस ऋतु में क्या खाएं, क्या न खाएं। दिन चर्या कैसा हो। सुबह और शाम में क्या खाना चाहिए।
- **आयुर्वेद ऐसा विज्ञान है जिसमें हमें कैसे औषधि का प्रयोग करना है यह बताया जाता है। इसके दैविक रूप को भी बताया गया है।** जब देव/वैद्य अपनी औषधि बनाता है तो औषधि को आमंत्रित करता है। औषधि को यंत्रों-मंत्रों से कूटता है और बताता है कि औषधियों में जितने दैविक गुण होंगे औषधि उतनी ही प्रभावशील होगी और रोगी को पुष्ट करेगी।
- **आयुर्वेद का भी आधिदैविक रूप है। एक प्रसिद्ध वैद्य थे जिन्हें आयुर्वेद के साथ ज्योतिष का ज्ञान भी था। अगर वैद्य जी इलाज करने गए तो इनका मरीज 100% ठीक होगा। आजतक जितने भी इलाज किये सब ठीक हुए। पर जहां वो नहीं जाते थे, अपने ज्ञान से मरीज का हाल चाल जान लेते थे और जिनका इलाज करने से मना कर दे मतलब वो मरेगा क्यों इन वैद्य जी ने मना कर दिया। ये वैद्य सलेक्टेड मरीजों को देखते थे। वैद्य औषधि के आधिदैविक रूप को पहचान कर, उस ऊर्जा को औषधि के साथ मिलाकर औषधि दिया करते थे।**
- आयुर्वेद ऐसा विज्ञान है जिसमें औषधि के दैवीय रूप की चर्चा है। आधिदैविक तत्व का ज्ञान हो तो प्रत्येक औषधि जीवनदायिनी संजीवनी बन सकती है। आयुर्वेद का अपना महत्व है पर आज आयुर्वेद का महत्व कम हो गया है नहीं तो आयुर्वेद अपने आप में एक स्वतंत्र विज्ञान था।
- हमारे जीवन में किसी चीज की कमी है तो वह है दैवीय तत्व की कमी है हमने अपने आप को सिर्फ फिजिकल बॉडी(शरीर) मान लिया है, अधिभूत मान लिया है। भगवान श्री कृष्ण गीता में कहते हैं अर्जुन को कि अधिभूत वो है जिसका क्षरण होता है, परंतु जब अधिदैव की बात आती है तो उसका मतलब है दैवीय चेतना, दैवीय तत्व। दैवीय तत्व होंगे तो हमारे अधिभूत को भी चेतना देंगे। मिट्टी में प्राण कहाँ से आते हैं? पंचमहाभूत मुस्कुराते कैसे हैं ? तो इस अधिदैव के कारण।
- **पंचमहाभूत में प्राण और जीवनीशक्ति अधिदैव की वजह से।**
- **जीवन में संपन्नता का, सुख का, शांति का श्रोत है - अधिदैव। तो हमारा जो Subtler Power जो है इसे बढ़ाना पड़ेगा। Quality of life will Improve if you start understanding Adhidaiv (अधिदैव)।**
- अधिदैव जीवन की Master Key है। अधिदैव संतुष्ट तो सब संतुष्ट।
- एक बार दक्षिणेश्वर में चर्चा चल रही थी विवेकानंद ने मजाक उड़ाया कि ये क्या जहां देखो ब्रम्ह। सर्वअखिलब्रम्ह। सारे अखिल विश्व में ब्रम्ह है तो इसका मतलब है लोटा ब्रम्ह, थाली ब्रम्ह, ग्लास ब्रम्ह राम कृष्ण जी ने कहा तुम मजाक कर रहे हो मजाक मत करो मुझसे। जबतक तुमको अनुभव नहीं होगा तुम नहीं मानने वाले। रामकृष्ण जी ने उनके सर पर हाथ रखा और ब्रम्ह दिखाया। उनको लोटे, ग्लास में भी ब्रम्ह दिखने लगा। उन्होंने कहा मैं इस ग्लास में पानी कोसे पियूँ? रामकृष्ण जी ने कहा सब जगह ब्रम्ह है। इसने केवन शेप शरीर लेलिया है लोटे का। तुमने उसका मजाक उड़ाया इसलिए दिखाना पड़ा पर मैंने उसको हटा दिया। लोटा, थाली में भी चेतना है।
- अधिदैव प्रसन्न रहता है त्रिकाल संध्या से। एकादशी का व्रत करते हैं। एकादश मतलब ग्यारह (10 इन्द्रियाँ + 1 मन) इसलिए एकादशी मनायी जाती थी।
- सभी में दैवीय चेतना होती है। **अधिदैव ऐसा दैवीय तत्व है जो जीवन को प्रकाशित कर देता है। यदि दैवीय तत्व में प्रकाश कम होगा तो जीवन में प्रकाश काम होगा। दैवीय तत्व में प्रकाश प्रखर हो तो जीवन प्रखर हो जाता है।**
- **अर्जुन पूछते हैं अधिदैवं किं? अधिदैव क्या है? भगवान उत्तर देते हैं ये पुरुष अधिदैव है - पुरुषश्चाधिदैवतम्। इति अधिदैवं।**

---------- ॐ शान्ति ----------

Watch Audio/Video Discourse of this class on YouTube.

Visit us on you tube – **shantikunjvideo**

www.awgp.org | www.dsvv.ac.in